प्रारंभिक व्यष्ठि अर्थशास्त्र

प्रस्तावना

मूल अवधारणाएँ

अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र दुर्लभता की स्थिति में चयन संबंधित व्यवहार का अध्ययन हैं ।

संसाधन : मानवीय जरूरतो की तुलना में दुर्लभ हैं और इनके वैकल्पिक अपयोग हैं ।

चयन की समस्या : जो संसाधनों की दुर्लभता के कारण उदय होती हैं, आधारभूत आर्थिक समस्या है ।

आर्थिक क्रिया : आय को सृचित करने वाली सभी क्रियाएँ अर्थिक क्रियाएँ होती है ।

आर्थिक क्रियाँए : उत्पादन उपभोग और निवेश

आर्थिक समस्या : चयन की समस्या जो संसाधनों कि दुर्लभता और वैकल्पिक प्रयोगों के कारण उत्पन्न होती है ।

व्यष्टि अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत इकाइयों (जैसे व्यक्तिगत उपभोग्ता, व्यक्तिगत उत्पादक) का अद्ययन करती है ।

समष्टि अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था का एक इकाई के रूप में अध्ययन करती

तीन केंद्रीय समस्याएँ १) क्या उत्पादन किया जाए २) कैसे उत्पादन किया जाए ३) किसके लिए उत्पादन किया जाए

क्या उत्पादन किया जाए ? यह समस्या वस्तुओं और सेवाओं के चयन की समस्या है जिनका उत्पादन सीमित संसाधनों द्वारा किया जाता है ।

कैसे उत्पादन किया जाए ? यह समस्या तकनीक के चयन की समस्या है । एक अर्थव्यवस्था को श्रम गहन तकनीक तथा पूँजी गहन तकनीक में से चयन करना पड़ता है ।

किसके लिए उत्पादन किया जाए ? यह समस्या उत्पादन या आय के वितरण की समस्या है ।

उत्पादन संभावना वक्र : दो वस्तुओं के सभी संभव संयोजनों को प्रकट करना है, जिनकी उत्पादन, दिए हुए संसाधनों एवं दी हुई तकनीक, के द्वारा हो सकता है ।

उत्पादन संभवता वक्र मूल बिंदु की ओर नतोदार होता है । क्यों कि वस्तु X के प्रत्येक अतिरिक्त इकाई की प्राप्ति के लिए वस्तु Y का अधिक से अधिक त्याग करना पड़ता है ।

अवसर लागत : दूसरे सर्वश्रेष्ठ त्यागे गए विकल्प का मूल्य है । किसीकारक की अवसर लागत से अभिप्राय उसके दूसरे सर्वश्रेष्ठ मूल्य से है ।

सीमांत अवसर लागत : से अभिप्राय Y वस्तु के उत्पादन की मात्रा से होने वाली उस कमी से है जो कि X वस्तु की एक अधिक इकाई के उत्पादन उत्पादन के फलस्वरूप होती है, जब संसाधनों को Y से X की ओर विवर्तित किया जाता है ।

उत्पादना संभावना वक्र : वह दो वस्तुओं के ऐसे सभी संबव संयोजनों (Combination) को प्रकट करता है जो एक अर्थव्यवस्था अपने वर्तमान संसाधनों और उपलब्ध तकनीक के पूर्ण व कुशलतम उपभोग से उत्पन्न कर सकती है ।

उत्पादन संभावना अनूसूची और वक्र (P P Schedule and Curve) मान लीजिए एक काल्पनिक अर्थव्यवस्था अपने वर्तमान संसाधनों और उपलब्ध तकनीक के पूर्ण उपभोग से केवल दो वस्तुओं - टैंक और गेहूँ का उत्पादन करती है जिनकी एक काल्पनिक अनुसूची नीचे दी गई है ।

उत्पादन संभावना	टैंक (हजार)	गेहूँ (लाख टन)
A	5	0
B	4	5
C	3	10
D	2	12
E	1	14
F	0	15

उपरोक्त तालिका में दिए हुए समस्त साधनों से टैंक और गेहूँ के उत्पादन की चह वैकल्पिक संभावनाएँ दिखाई गई है ।

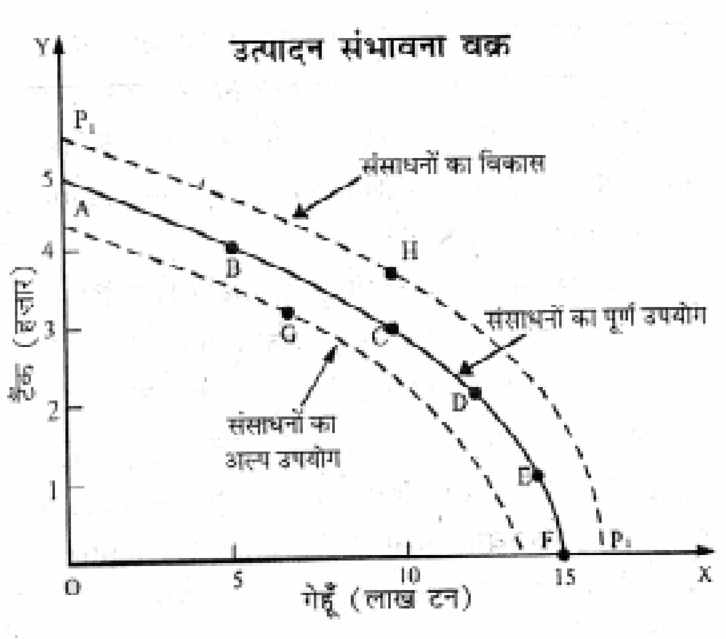

A B C D E F बिंदुओं को मिलाने से निर्भित वक्र को उत्पादन संभावना चक्र करते है ।

PP वक्र पर दर्शाने वाली विभिन्न स्थितियाँ - PP वक्र दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के संसाधनों का कैसा उपयोग हो रहा है जिसे नीचे स्पष्ट किया गया है ।

I उत्पादन संभावना वक्र AF के प्रत्येक बिंदु पर उत्पादन संसाधनों का पूर्ण उपयोग दर्शाता है ।

II PP वक्र के नीचे किसी बिंदु (जैसे बिंदु G) पर उत्पादन, संसादनों का उल्प उपयोग या अकुशल दर्शाता है ।

III PP वक्र के ऊपर किसी बिंदु (जैसे बिंदु H) पर उत्पादन, संसादनों का विकास (बढ़ोतरी प्रकट करता है ।

<u>PP वक्र के दो लक्षण</u> (Properties) उल्लेखनीय है ।

I PP वक्र बाएँ से दाएँ नीचे को और ढालू होता है ।

II PP वक्र मूल बिंदु की ओर नतोदर (Concave) होता है

<u>One Mark Question or 3 / 4 Mark Questions</u>

1) अर्थशास्त्र की परिभाषा दे ।
2) आर्थिक समस्याएँ क्यों उत्पन्न होती है ?
3) किसके लिए उत्पादन किया जाए की
   केन्द्रीय समस्या को उदाहरण द्वारा समझाईए
4) उत्पादन संभावना वक्र की परिभाषा दे ।
5) उत्पादन संभावना वक्र के संदर्भ में सीमंत अवसर लागत को परिभाषित करे ।
6) उत्पादन संभावना वक्र मूल बिंदु की ओर नतोदार क्यों है ?

उपभोक्ता संतुलन और मांग

मूल अवधारणाएँ

उपयोगिता : किसी वस्तु में अवश्यकता को संतुष्ट करने की शक्ति को उपयोगिता कहा जाता है ।

कुल उपयोगिता : एक वस्तु की सभी इकाइयों के उपभोग करने से प्राप्त होने वाली उपयोगिता का जोड़ ।

$Tux = \Sigma mu$

सामांत उपयोगिता : वस्तु की एक अधिक इकाई के प्रयोग करने से प्राप्त होने वाली अतिरिक्त उपयोगिता

$Mu = Tu_n - Tu_{n-1}$

ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम : यह व्यक्त करता है कि किसी वस्तु की मानक इकाइयों के निरंतर अधिकाधिक प्रयोग करने से उपभोक्ता के लिए उसकी सीमांत उपयोगिता घटती जाती है ।

कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता में संबंध :

Relationship between MU and TU - इस संबंध को निम्न तालिका वह रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ठ किया गया है ।

उपभोग किए गए संतरो की इकाइयाँ	सीमंत उपयोगिता (यूटिल)	कुल उपयोगिता (यूटिल)
0	-	0
1	10	10
2	8	18 (=10+8)
3	5	23 (=10+8+5)
4	2	25 (=23+2)
5	1	26 (=25+1)
6	0	26 (=26+0)
7	-3	23 (=26-3)

उपरोक्त तालिका को नीचे चित्र MU वक्र और TU वक्र द्वारा दशाया गया है ।

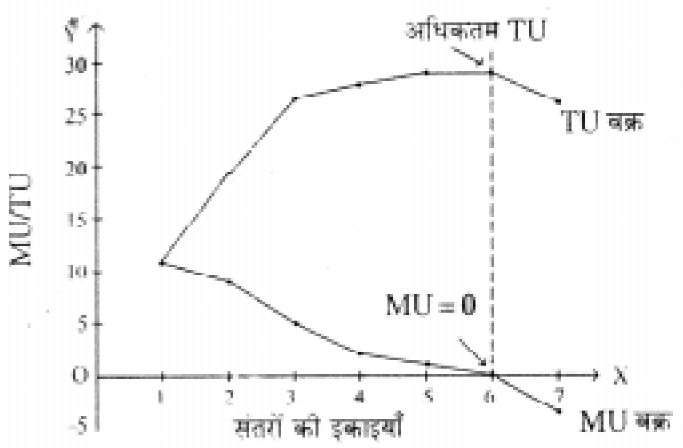

सीमांत उपयोगिता व कुल उपयोगिता में संबंध (Relationship)

(i) कुल उपयोगिता तब तक बढ़ती है जब तक सीमंत उपयोगिता धनात्मक (शून्य से अधिक) होती है ।

(ii) कुल उपयोगिता तब अधिकतम होती है जब सीमंत उपयोगिता शून्य (Zero) होती है

(iii) कुल उपयोगिता कम होनी शुरू हो जाती है जब सीमंत उपयोगित ऋणात्मक (शून्य से कम) हो जाती है ।

उपभोक्ता संतुलन

उपभोक्ता संतुलन का अर्थ - उपभोक्ता संतुलन वह स्थि है जब उपभोक्ता अपनी दी हुई आय को किसी वस्तु (या वस्तुओं के संयोजन) की खरीद पर इस प्रकार खर्च करता है जिसमे उसे अधिकतम संतुष्ठि प्राप्त होती है और इसे बदलने का उसे कोई आकर्षण नहीं होता है ।

अपभोक्ता संतुलन की एक वस्तु की स्थिति में शर्त (Condition) - समझाइए ()

उत्तर - उपभोक्ता संतुलन की शर्त (एक वस्तु कि स्थिति में)- एक वस्तु को खरीद की स्थिति में उपभोक्ता संतुलन तब प्राप्त होता है जब :

अर्थात जब x वस्तु की सामांत उपयोगित (MU) का मौद्रिक मान = x वस्तु की कीमत (P)

अर्थात $MU_x = P_x$

उपयोग किए गए संतरो की संख्या	सीमंत उपयोगिता (यूटिल)	सामांत उपयोगिता का मौद्रिक मान (रू.) (संतरे की सीमंत उपयोगिता + रू. की सीमंत उपयोगिता)	संतरे की कीमत (रू.)	लाभ (रू.)
0	0	-	-	-
1	10	5 (= 10+2)	1	4
2	8	4 (= 8+2)	1	3
3	5	2.5 (= 5+2)	1	1.5
4	2	1 (+2=2)	1	0
5	1	5 (=1+2)	1	-.5
6	0	0 (=0+2)	1	-1

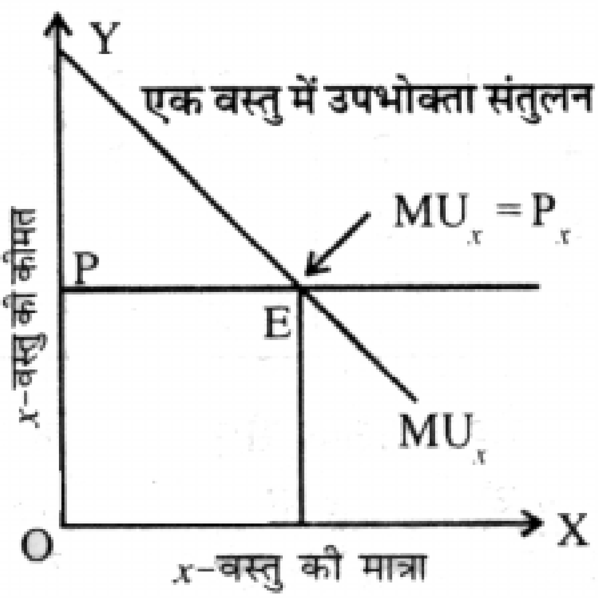

उपभोक्ता संतुलन - (दो वस्तुओं की स्थिति में)

दो वस्तुओं की खरिद की स्थिति में उपभोक्ता संतुलन की शर्त - यह संतुलन तब प्राप्त होता है जब :

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$$

अर्थात एक वस्तु की सीमांत उपयोगिता (MU) और उसकी कीमत (P) का अनुपात दूसरी वस्तु की सीमांत उपयोगिता (MU) और कीमत (P) के अनुपात के बराबर हो ।

दो वस्तुओं की स्थिति में उपभोक्ता संतुलन

वस्तु की इकाइयाँ	MU_x	**(१ रु. मूल्य से प्राप्त** MU **)** $\frac{MU_x}{P_x}$	MU_y	$\frac{MU_y}{P_y}$ **(१ रु. मूल्य से प्राप्त** MU **)**
1	**50**	**50 + 5 = 10**	**24**	**24 + 2 = 12**
2	**40**	**40 + 5 = 8**	**22**	**22+ 2 = 11**
3	**30**	**30 + 5 = 6**	**20**	**20 + 2 = 10**
4	**20**	**20 + 5 = 4**	**18**	**18 + 2 = 9**
5	**10**	**10 + 5 = 2**	**15**	**16 + 2 = 8**
6	**0**	**-**	**14**	**14 + 2 = 7**

उपरोक्त तालिका में स्पष्ट है कि 20 रु. को दी हुई आय के व्यय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए उबभोक्ता x वस्तु (जैसे चाय) की 2 इकाइयाँ (10 रू. (= 5 x 2) खर्च करके) खरिदेगा और y वस्तु (जैसे बिस्कुट) को 5 इकाइयाँ (10 रू. (= 5 x 2) खर्च करके खरिदेगा दो वस्तुओं के इस संयोजन (Combination) से उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि (या संतुलन की अवस्था) प्राप्त करता है.

क्योंकि x वस्तु की स्थिति में 1 रू. मूल्य की सीमंत उपयोगिता $\left[\frac{MU_x}{P_x} = \frac{40}{5}\right]$ है और y वस्तु को स्थिति में भि १ रू. मूल्य को सीमंत उपयोगिता 8 $\left[\frac{MU_y}{P_y} = \frac{16}{2}\right]$ है अर्थात दोनों वस्तुओं में 1 रू. मूल्य की सीमांत उपयोगिता बराबर है $\left[\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}\right]$ यहाँ उपभोक्ता संतुलन की उपरीक्त शर्त पूरी हो जाती है ।

<u>तटस्थता वक्र दृष्टिकोण के प्रयोग द्वारा उपभोक्ता संतुलन</u>

<u>तटस्था वक्र</u> : दो वस्तुओं के ऐसे संयोजनों को दर्शाता है जिनसे उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि प्राप्त होती है

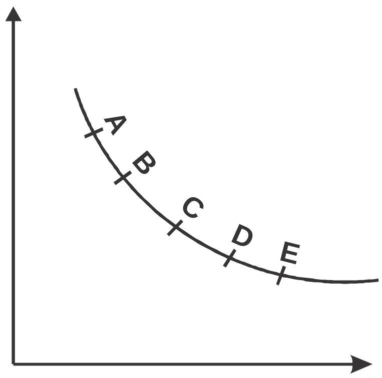

<u>तटस्थता वक्र के लक्षण</u> : (Properties of Indifference Curve)

(i) तटस्थता वक्र हमेशा बाएँ से दाएँ को ओर ढालू होता है ।

(ii) तटस्थता वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काट सकते ।

(iii) ऐसे चक्रों का ढलान मूलबिंदु (O) को ओर उन्नतोदर (Convex) होता है ।

(iv) तटस्थता वक्रों में सबसे ऊँचा वक्र सबसे अधिक संतुष्ठि दर्शाता है ।

<u>तटस्थता मानचित्र</u>: (Indifference Map) **संतुष्ठि के विभिन्न स्तरों को प्रकट करने वाले तटस्थता वक्रों के समूह को तटस्थता मानचित्र कहते है ।**

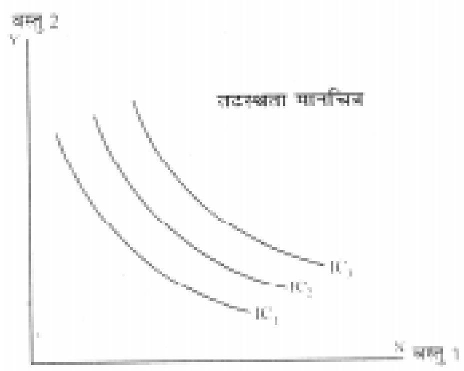

इस संबंध में ध्यान देने योग्य बात यह है कि सबसे ऊँचा तटस्थता वक्र (जैसे चित्र) सर्वाधिक संतुष्टि का स्तर दर्शाता है जबकि सबसे नीचा तटस्थता वक्र सबसे कम संतुष्टि स्तर को दर्शाता है । क्योंकि जैसे वक्र पर वस्तु - १ और वस्तु २ की इकाइयों का उपभोग अधिक हो रहा है ।

<u>बजट रेखा</u> (Budget Line) बजट रेखा दी वस्तुओं के उस सब संयोजनों (Combinations) को दर्शाती है जिन्हे उपभोक्ता निर्दिष्ट आय और कीमतों पर अपनी समस्त आय से खरीद सकता है ।

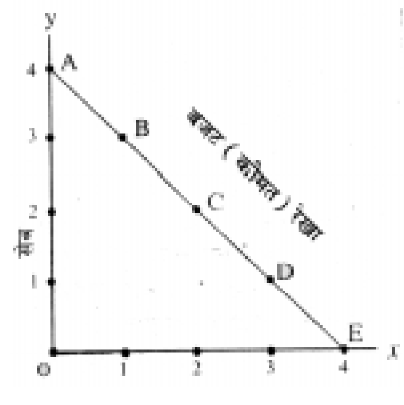

दो वस्तुओं के विभिन्न संयोजनों के प्रतीक A,B,C,D,E बिंदुओं को मिलाने से एक सरल रेखा बन गई है किसे बजट रेखा कहते है । ध्यान रहे बजट रेखा को कीमत रेखा (Price Line) या आय रेखा भी कहा जाता है ।

d) **<u>सीमांत प्रतिस्थापना की दर</u>** (Marginal Rate of Substitution - MRS) वह दर जिस पर उपभोक्ता वस्तु 1 की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए वस्तु - 2 की मात्रा त्यागने को तैयार है, सीमांत प्रतिस्थापन की दर (MRS) कहलाती है ।

$$\text{सांकेतिक रूप में : } \quad MRS_{xy} = \frac{\Delta \text{ वस्तु - 2}}{\Delta \text{ वस्तु - 1}}$$

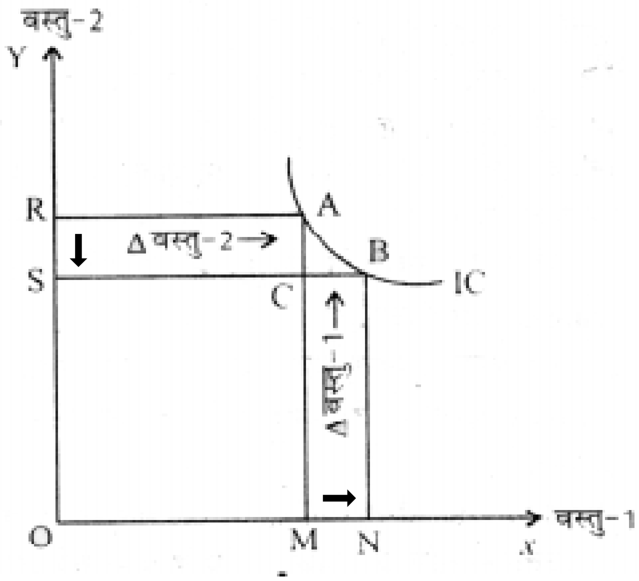

सीमांत प्रतिस्थापना की दर (M R S) घटती जाती है, क्योंकि वस्तु - 1 के प्रत्येक वृद्धि के बदले उपभोक्ता वस्तु - 2 की घटती हुई मात्रा त्यागने (कुर्बान करने) के लिए तैयार होता है ।

तटस्थता वक्र (Indifference Curve) की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्त स्पष्ट कीजिए । (रेखा चित्र का प्रयोग कीजिए

उत्तर : उपभोक्ता संतुलन को अवस्था को तब प्राप्त होता है जब वह दी हुई आय और वस्तुओं की कीमतों पर अपनों संतुष्टि को अधिकतम करता है ।

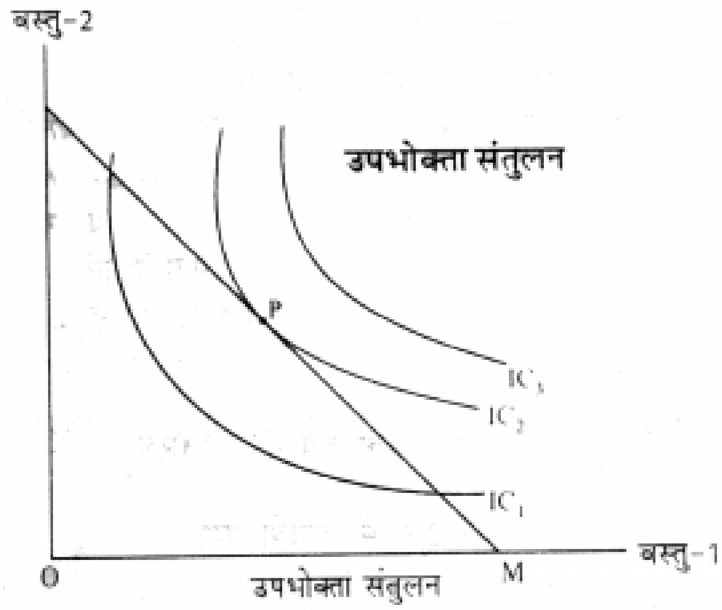

उपभोक्ता संतुलन

उपभोक्ता संतुलन की दो शर्ते है

१) बजट रेखा को तटस्थता वक्र पर स्पर्श-रेखा (tangent) होनी चाहिए दूसरे शब्दों में तटस्थता वक्र का ढाल = बजट रेखा का ढाल ।

२) संतुलन बिंदु - (यहाँ बिंदु P) पर तटस्थता वक्र उद् गम (origin) बिंदु की ओर उन्नतोदर (Convex) होना चाहिए अर्थात सीमांत प्रतिस्थाप दर (Marginal Rate of Substatution) घटती हुई होनी चाहिए ।

माँग

माँग : किसी वस्तु की वे मात्राएँ है । जिन्हे उपभोक्ता निश्चित कीमत पर एक निश्चित समय में खरीदने के लिए तैयार है ।

माँग फलन : किसी वस्तु के लिए माँग तथा इसके विभिन्न निर्धारक तत्त्वों के बीच कार्यात्मक संबंध को व्यक्त करता है ।

माँग को प्रभावित करने वाले कारक

1) वस्तु की कीमत
2) उपभोक्ता की आय
3) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमते
4) रूचि एवं प्राथमिकताएँ
5) भविष्य में वस्तु की कीमतों में परिवर्तन की आशा

माँग की नियम : किसी वस्तु की कीमत बढ़ने से उस वस्तु की माँग कम हो जाती है और कीमत कम होने से उसकी माँग बढ़ जाती है यदि अन्य सभी बातें एक समान रहें ।

माँग अनूसूची (Demand Schedule)

कीमत प्रति किग्रा (रू.)	माँग की मात्रा (कि ग्रा.)
8	**2**
6	**3**
4	**4**
2	**5**

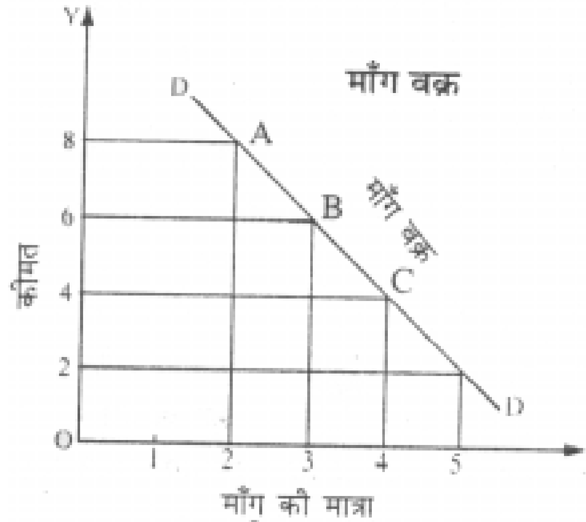

माँग वक्र प्राय: ढाई और ढालू होता है । इसे ऋणात्मक ढलान (negatively sloped) वाला वक्र कहते है ।

(घ) **मान्यताएँ** (Assumptions) अन्य बाते समान रहे ।

दूसरे शब्दों में नियम तभी लागू होगाजब कीमतेतर कारकों जैसे संबंधित वस्तु की कीमत, उपभोक्ता की आय, रूचि, फैशन आदि पूर्ववत रहें अर्थात इनमें परिवर्तन न हो ।

माँग की मात्रा में परिवर्तन तथा माँग में परिवर्तन

अन्य बाते समान रहने पर यदि केवल कीमत में कमी या वृद्धि के फलस्वरूप वस्तु की अधिक या कम मात्रा की माँग की जाती है तो उसे माँग की मात्रा में परिवर्तन कहा जाता है ।

दूसरी तरफ जब कीमत के अतिरिक्त अन्य कारकों में अधिक मात्रा की माँग की जाती है तो इसे माँग में परिवर्तन कहा जाता है ।

व्यक्तिगत माँग और बाजार माँग

व्यक्तिगत माँग और बाजार माँग - वस्तु के लिए व्यक्तिगत माँग से अभिप्राय दी हुई अवधि में विभिन्न कीमतों पर व्यक्तिगत परिवार द्वारा वस्तु को माँगों गई मात्रा में है । इसके समय में सभी उपभोक्ताओं की सकल या सामुहिक माँग को दर्शाती है । व्यक्तिगत उपभोक्ताओं के माँग जोड़ने से बाजार माँग निकाल आती है ।

कीमत प्रति किग्रा (रू.)	व्यक्तिगत (परिवार) माँग अनुसूची व्यक्तिगत परिवार द्वारा आलू की माँग (कि.ग्रा.)			बाजार माँग अनुसूची सामूहिक (बाजार) माँग (कि.ग्रा)
	A	B	C	(A+B+C)
1	6	11	13	30
2	5	9	12	26
3	4	7	11	22
4	3	5	10	18
5	2	3	9	14
6	1	1	8	10

बाजार माँग को प्रभावित करने वाले कारक - वस्तु की बाजार माँग (Market demand) पर प्रभाव डालने वाले मुख्य कारक निम्नलिखित है ।

I) संबंधित (पूरक व स्थानापन्न वस्तुओं) की कीमत

II) उपभोक्ता की रूचि तथा प्राथमिकता

III) बाजार में उपभोक्ताओं की संख्या

IV) आय का वितरण - यदि

V) उपभोक्ताओं की बनावट - यदि

घटिया वस्तुएँ (Inferior goods) जिन वस्तुओं की माँग आय बढ़ने पर कम हो जाती है और आय घटने पर बढ़ जाती है उन्हें निम्न (घटिया) या निम्न कोटि की वस्तुएँ कहते है ।

सामान्य वस्तुओं (Normal goods) की हालत में आय बढ़ने पर इनकी माँग बढ़ जाती है और आय घटने पर इनकी माँग घट जाती है

माँग की कीमत लोच

माँग की कीमत लोच का अर्थ - कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन (या प्रतिक्रिया) के माप को माँग की कीमति लोच कहते है ।

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग मे \% परिवर्तन}}{\text{कीमत में \% परिवर्तन}}$$

माँग की लोच को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है -

I) प्रस्थापन वस्तु की उपलब्धि
II) वस्तु की प्रकृति
III) उपभोक्ता की रूचि व आदत
IV) वस्तु के उपभोग के स्थगन की संभावना
V) वस्तु के विभिन्न प्रयोग
VI) वस्तु का मूल्य
VII) संयुक्त माँग
VIII) आय का वितरण
IX) समय का प्रभाव

माँग की कीमत लोच की विभिन्न श्रेणियाँ

I) पूर्ण बोलोचदार माँग
II) इकाई से कम लोचदार माँग
III) इकाई के बराबर लोचदार माँग
IV) इकाई से अधिक लोचदार माँग
V) पूर्ण (अनंत) लोचदार माँग

माँग की कीमत लोच मापने की तीन विधियाँ

माँग की कीमत लोच मापने की तीन मुख्य विधियाँ है - कुल व्यय विधि, प्रतिशत विधि और रेखागणितीय विधि ।

कुल व्यय विधि () इस विधि के अनुसार हम लाभ कीमत में परिवर्तन का कुल व्यय पर प्रभाव देखने है अर्थात कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु पर कुल व्यय पहले से बढ़ गया है, या कम हो गया है या उतना ही है ।

i) यदि कीमत गिरने पर कुल व्यय बढ़ जाता है या कीमत बढ़ने से कुल व्यय घट जाता है अर्थात जब दोनों विपरीत दिशा में चलते है तो माँग की लोच इकाई से अधिक होती है (e_D>1)

ii) यदि कीमत गिरने से कुल व्यय गिरता है और कीमत बढ़ने से कुल व्यय बढ़ता है अर्थात जब दोनों एक ही दिशा में चलते है तो माँग की कीमत लोच इकाई से कम होती है (e_D<1)

iii) यदि कीमत का बढ़ने से कुल व्यय उतना ही रहता है तो माँग की कीमत लोच इकाई के बराबर मानी जाते है ((e_D=1))

प्रतिशत विधि (Percentage Method)

माँग को लोच मापने की प्रतिशत विधि को आनुपातिक विधि (Proportionate Method) भी कहते है ।

$$\text{माँग की लोच } (e_D) = \frac{\text{माँग मे \% परिवर्तन}}{\text{कीमत में \% परिवर्तन}}$$

$$(e_D) = \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{p}{q}$$

वहाँ ΔP (डेल्टा) P = कीमत में परिवर्तन (नई कीमत - आरंभिक कीमत)

P = आरंभिक कीमत

Δq = माँग में परिवर्तन (नई माँग - आरंभिक माँग)

Δp = आरंभिक माँग

रेखागणतीय विधि

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग वक्र का नीचे का भाग}}{\text{माँग वक्र का ऊपर का भाग}}$$

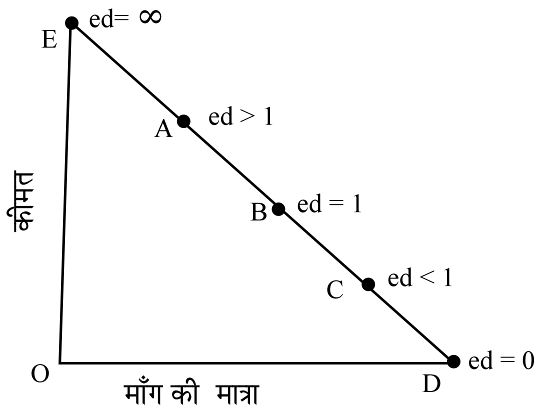

One Mark Questions

1) उपभोक्ता संतुलन की परिभाषा दीजिए ।
2) सीमांत उपयोगिता को परिभाषित कीजिए ?
3) सीमांत उपभोगिता शून्य होने पर कुल उपयोगिता कैसे होती है ?
4) पूरक वस्तुए किन्हे कहते है ?
5) स्थानपन्न वस्तुओ के कीमत में गिरावट का वस्तु की माँग पर कैसे प्रभाव माँग वक्र कब दाई ओर खिसकता है
6) माँग में विस्तार का क्या अर्थ है ?
7) दी हुई कीमत पर एक उपभोक्ता कम मात्रा कब खरीदता है ?
8) उपभोक्ता के संतुलन के शर्त बताइए ?
9) बाजार माँग की परिभाषा दीजिए ?

3 / 4 Mark Questions

1) सीमांत उपभोक्ता और कुल उपभोगिता में संबंध बताइए ?

2) ह्रासमान सीमांत उपभोगिता नियम का वर्णन कीजिए ?

3) माँग वक्र के दाई ओर खिसकने के तीन कारण लिखिए ?

4) आप में परिवर्तन वस्तु के माँग को कैसे प्रभावित करता है ?

5) माँग वक्र के दाई ओर खिसकने के तीन कारण बताइए ?

6) आय वृद्धि का घटिया वस्तु के माँग पर प्रभाव समझाइए

7) वस्तु के प्रकृति किस प्रकार माँग की कीमत लोच को प्रभावित करते है ?

8) एक वस्तु की माँग की कीमत लोच है । 10 रू. प्रति इकाई की कीमत यदि इसकी कीमत घटकर 40 है । यदि इसकी कीमत घटकर 5 रू. हो जाती है तो इसकी माँगी गई मात्रा कितनी होगी

6 Marks Questions

1) उपभोक्ता संतुलन किसे कहते है ? वस्तु की सीमांत उपभोगिता का मौद्रिक मान वस्तु की कीमत के बराबर होने पर उपभोक्ता संतुलन क्यों होता है ? समझाइए ?

2) तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्त समझाइए ।

3) एक वस्तु की माँग संबंधित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन से कैसे प्रभावित होती है ?

4) एक वस्तु और दो वस्तुओं की स्थिति मे उपभोक्ता संतुलन की शर्तों की व्याक्या कीजिए ।

उत्पादक व्यवहार और पूर्ति

उत्पादन फलन : दी हुई तकनीक के अन्तर्गत आगत और निर्गत के बीच संबंध को उत्पादन फलन कहते है ।

$$\text{उत्पादन} = f\ (\text{भूमि, श्रम, पूँजी आदि})$$

कुल उत्पाद : किसी विशेष अवधि में साधनों की किसी विशेष मात्रा से फर्म द्वारा उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की कुल मात्रा

औसत उत्पाद : साधन की प्रति इकाई उत्पादकता

$$AP = \frac{TP}{N}$$

सीमांत उत्पाद : परिवर्ती साधन की एक अतिरिक्त इकाई लगाने से कुल उत्पाद में वृद्धि ।

$$MP = TP_n - TP_{n-1}$$

कुल उत्पाद और सीमांत उत्पाद में संबंध

MP और TP में संबंध

i) जब TP बढ़ती दर से बढ़ता है तो MP भी बढ़ता है

ii) जब TP घटती हुई दर से बढ़ता है तो MP घटता है

iii) TP तब अधिकतम होता है जब MP शून्य (zero) होता है

iv) जब TP घट रहा होता है तो MP ऋणात्मक (-) होता है

साधन के प्रतिफल

केवल एक साधन बढ़ाने से कुल उत्पाद पर प्रभाव परिवर्तनशील अनुपात के नियम कटते

एक साधन के प्रतिफल का अभिप्राय स्थिर साधनों के साथ परिवर्त साधन की एक अतिरिक्त इकाई लगाने से कुल भोतिक उत्पाद (TPP) में परिवर्तन से है ।

परिवर्ती अनुपात का नियम

परिवर्ती अनुपात का नियम यह बताता है कि जब अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए परिवर्ती साधन की इकाइयाँ बढ़ाई जाती है तो पहले कुल भोतिक उत्पाद (TPP) बढ़ती दर से बढ़ता है, परंतु एक सीमा के बाद कुल उत्पाद में वृद्धि कम होती जाती है अर्थात पहले सीमांत भौतिक उत्पाद (MPP) बढ़ता है, फिर कम होने लगता है और अंत में ऋणात्मक हो जाता है । इस प्रकार यह नियम तीन अवस्थाएँ दर्शाता है ।

पहली अवस्था - (TPP) बढ़ती दर से बढ़ता है । चित्र में यह अवस्था उत्पादन स्तर के O बिंदु से शुरु होकर, Q बिंदु पर समाप्त हो जाती है । इस अवस्था में TPP बढ़ती दर से बढ़ता है । तदनरूप TPP वक्र O से M तक बढ़ती दर से बढ़ रहा है । इस अवस्था को नियम के बढ़ते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है ।

दूसरी अवस्था - TPP घटती दर बढ़ता है ।

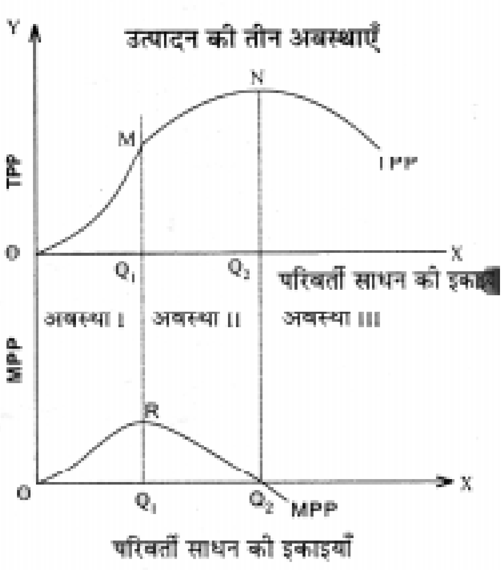

इस अवस्था को परिवर्ती अनुपात के नियम के घटते (ह्रासमान) प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है । कोई भी फर्म दूसरी अवस्था में कार्यशील होने का प्रयास करेगी ।

तीसरी अवस्था : TPP गिरना शुरु हो ता है । फलस्वरूप TPP वक्र भी नीचे की ओर ढलना शुरू हो जाता है ।

इस अवस्था को ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था कहतेहै ।

लागत

लागत का अर्थ : अर्थशास्त्र में वस्तु की उत्पादन लागत के स्पष्ट लागते और अस्पष्ट लागतें दोनों शामिल की जाती है ।

कुल लागत = स्पष्ट लागत + अस्पष्ट लागत

स्थिर लागतें : वे लागतें जो उत्पादन की मात्रा बढानें या घटने पर बढ़ती या घटदी नहीं है । उदा : किराया ब्याज, स्थायी श्रमिकों की तनख्या आदि

परिवर्ती लागते : वे लागते जो उत्पादन की मात्रा बढ़ाने पर बढ़ती है और मात्रा घटाने पर घटती है ।

उदा : कच्चेमाल पर ब्यय, श्रमिको को मजदूरी बिजली का खर्च आदि

कुल व्यय (TC) = कुल स्थिर लागते (TFC) +
कुल परिवर्ती लागते (TVC)

TFC, TC, TVC वक्रों में संबंध

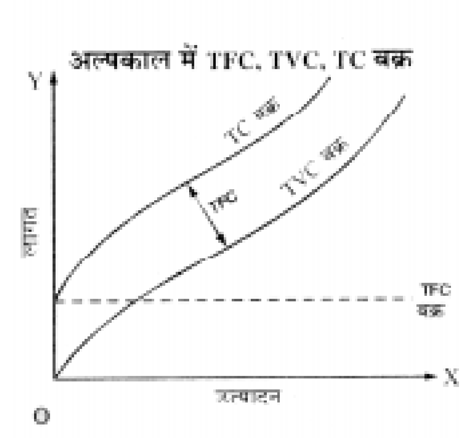

TFC वक्र X अक्ष के समानांतर रहता है ।

TFC वक्र दाई और ऊपर की ओर उटता हुआ है ।

TC वक्र परिभाषा के अनुसार TFC चक्र और TVC वक्र का उर्ध्व जोड़ (Vertical Summation)

उत्पादन शून्य होने पर कुल लागत (TC) कुल स्थिर लागत (TFC) के बराबर होती है

फलस्वरूप TC वक्र और TVC वक्रों का आकार बिलकुल एक जैसा होता है सिवा इसके कि TVC चक्र शून्य उत्पादन होने पर शून्य बिंदु से शुरू होता है । जब कि शून्य पर TC वक्र - Y अक्ष पर FC के बराबर दूरी से शुरू होता है ।

औसत स्थिर लागत (AFC) प्रति इकाई स्थिर लागत

$$AFC = \frac{TFC}{N}$$

औसत परिवर्ती लागत (AVC) वस्तु की प्रति इकाई परिवर्ती लागत

$$AVC = \frac{TVC}{N}$$

औसत कुल लागत (ATC) यह प्रति इकाई उत्पादन लागत है

$$ATC = AFC + AVC$$

$$ATC = \frac{TC}{N}$$

औसत लागत (MC) : वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई उत्पन्न करने से कुल लागत में वृद्धि

$$MC = TC_n - TC_{n-1}$$

<u>MC और AC में संबंध</u>

AC वक्र और MC वक्र में संबंध

जब तक MC, AC से कम है, तब तक AC वक्र गिरता है

जब MC वक्र गिरता है तो AC वक्र की तुलना में अधिक गति से गिरकर अपने न्युनतम बिंदु पर पहले पहुँच जाता है ।

AC वक्र का U आकार क्यों

इसका कारण परिवर्ती अनुपात के नियमक का लागु होता है । जैसे - जैसे वस्तु का उत्पादन बढ़या जाता है, शुरू में (वर्धमान प्रतिफल के कारण) AC गिरता है, फिर अपने न्यूनतम बिंदु पर पहुँचता है और उसके बाद (ह्रासमान प्रतिफल के कारण) AC ऊपर उठना शुरू कर देता है । AC का न्यूनतम बिंदु प्रति इकाई को न्यूनतम औसत लागत दर्शाता है ।

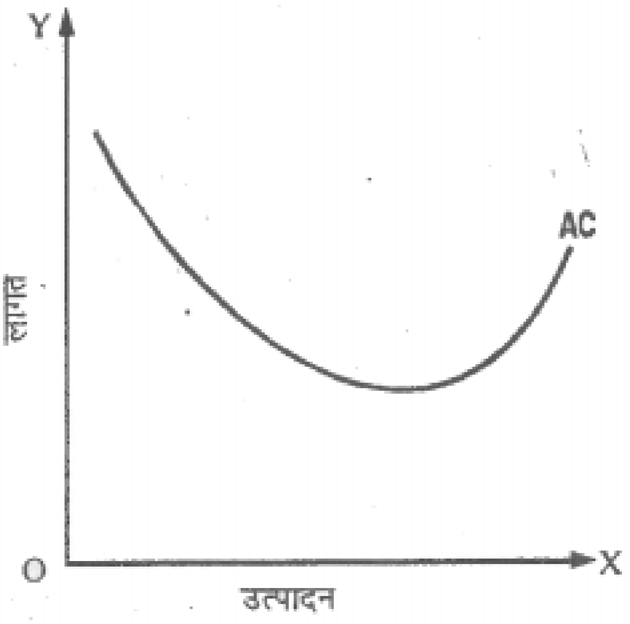

ATC, AVC और MC वक्रों में संबंध

चूँकि अल्पकाल में स्थिर लगात (FC) बदलति नहीं है, इसलिए उत्पादन को मात्रा बढ़ाने पर केवल परिवर्ती लागत (VC) बढ़ती है ।

रेखाचित्र ATC, AVC और MC वक्रों में संबंध स्पष्ट करता है । रेखाच्रित से स्पष्ट है कि AVC, ATC और MC वक्र एक बिंदु तक तीनों गिरते है और उसके बाद ऊपर उठते है । दूसरे शब्दों में वे लगभग U आकार के होते है । जिनका कारण परिवर्ती अनुपात के प्रतिफल नियम को तीन अवस्थाएँ है

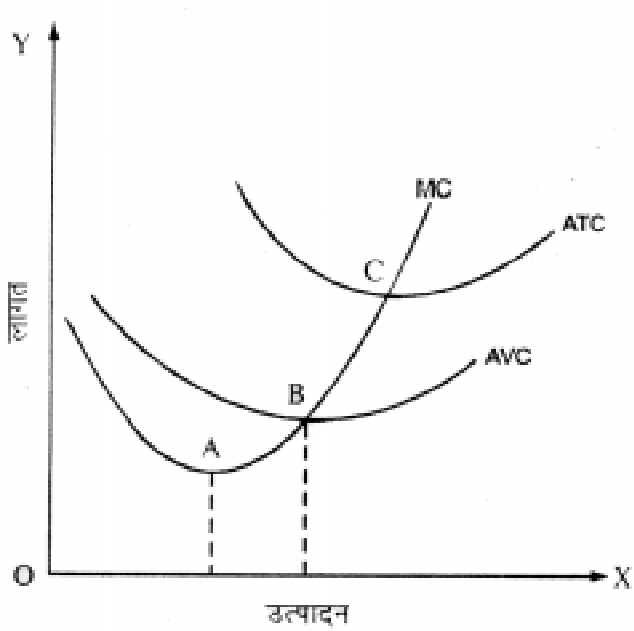

i) MC वक्र AVC वक्र की तुलना में तेजी से गिरता भी है और उठता भी है ।

ii) MC वक्र AVC वक्र और ATC वक्र को उनके न्यूनतम बिंदु पर काटता है

iii) AVC और ATC वक्रों के बीच लंबात्मक (vertical) दूरी घटती जाती है ।

ध्यान रहे, ATC वक्र और AVC वक्र एक दूसरे को काटते नहीं है, क्योंकि ATC और AVC का अंतर AFC होती है जो सदा धनात्मक (positive) अर्थात शून्य से अधिक होती है । इस प्रकार AFC का धनात्मक मूल्य ATC और AFC वक्रों को अलग रखता है ।

आगम

<u>आगम</u> : एक फर्म द्वारा अपनी वस्तु की बिक्री से प्राप्त रकम ।

<u>कुल आगम</u> (TR) वस्तु की विशेष मात्रा बेचने से प्राप्त राशि

$TR = Q \times P$

<u>औसत आगम</u> (AR) : बेची गई वस्तु की प्रति इकाई के आगम

$$AR = \frac{TR}{Q}$$

$TR = P \times Q$ $AR =$ कीमत

<u>सीमांत आगम</u> : (MR) **वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने से कुल आगम में वृद्धि**

$MR = TR_n - TR_{n-1}$

AR **और** MR **में संबंध : (पूर्ण प्रतिभोगिता में)**

<u>पूर्ण प्रतियोगिता में AR और MR में संबंध : MR = AR</u>

पूर्ण प्रतियोगिता में उद्योग (Industry) कीमत निर्धारित करता है और फर्म उस कीमत को स्वीकार करती है । इस कीमत पर फर्म वस्तु की जितनी इकाइयाँ बेचना चाहे बेच सकती है । फलस्वरूप वस्तु को प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के बेचने से प्राप्त अतिरिक्त आगम (MR) और औसत आगम (AR) कीमत के बराबर होते है अर्थात MR = AR = कीमत

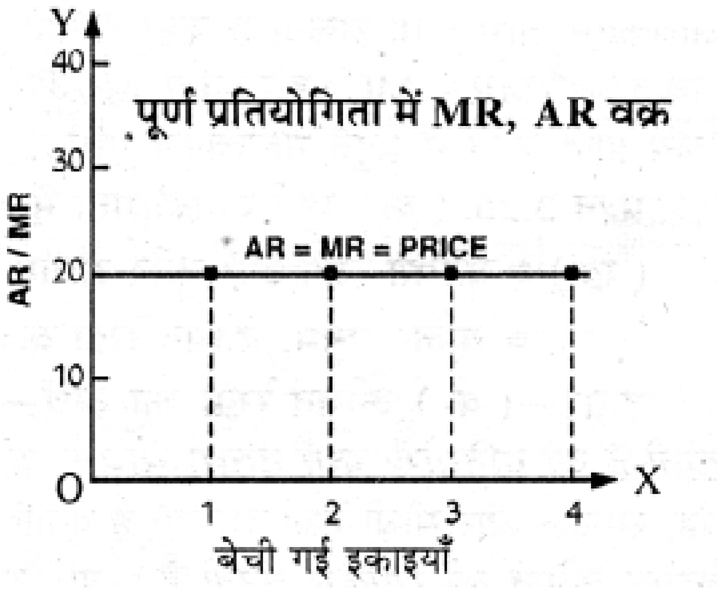

एकाधिकरण (Monopoly) व एकाधिकारिक प्रतियोगिता में AR और MR में संबंध (MR < AR)

एकाधिकार व एकाधिकारिक प्रतियोगिता बाजार में सीमांत (MR) औसत आगम (AR) से कम होता है । अर्थात MR < AR
इसका कारण यह है कि इन दोनों प्रकार के बाजारों (Markets) में कीमत कम करके वस्तु की अधिक इकाइयाँ बेची जा सकती है ।

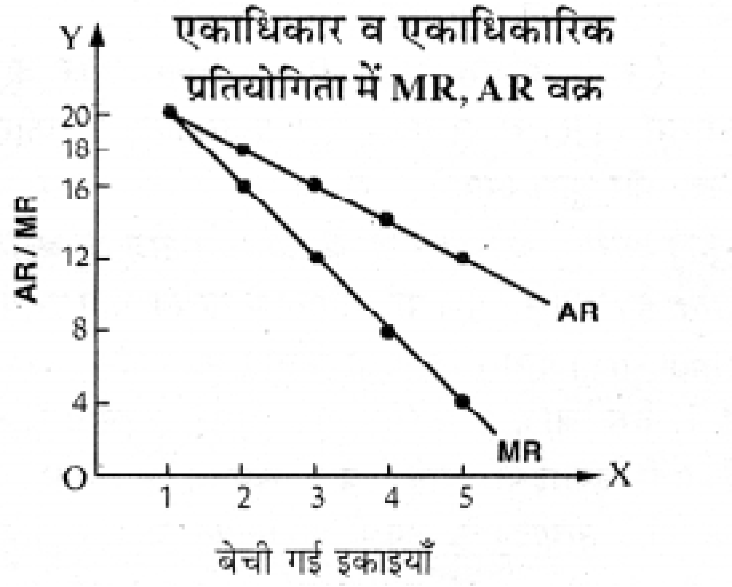

उत्पादक संतुलन

उत्पादक संतुलन उत्पादन के उस स्तर जिस पर उत्पादक को अधिकतम लाभ प्राप्त होता है । और वह उसी स्तर पर टिका रहना चाहता है -

MR और MC विधि

संतुलन की सीमांत आगम और सीमांत लागत विधि :

सामान्यत : किसी भी फर्म को अधिकतम लाभ कमाने को शर्त MR = MC मानी जाती है , परंतु पूर्ण प्रतियोगी फर्म के लिए संतुलन को शर्त P=MC मानी जाती है । अर्थात फर्म को संतुलन को अवस्था तब प्राप्त होती है जब वस्तु को कीमत (P) उसकी सीमांत लागत (MC) के बराबर होती है ।

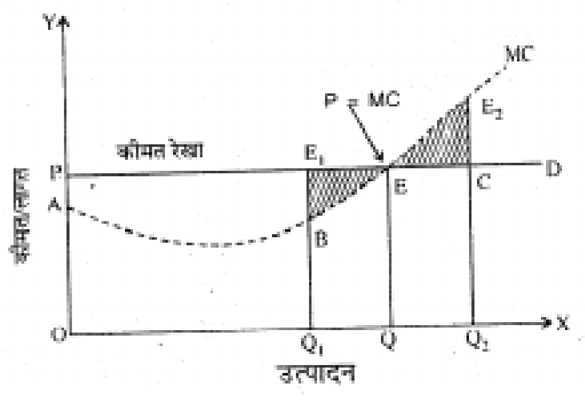

संतुलन (अधिकतम लाभ) की शर्त P=MC तभि सत्य सिद्ध होती है जब कीमत रेखा उटते हुए MC वक्र को काटती है अर्थात कीमत MC (सीमांत लागत) से अधिक होनी चाहिए ।

पूर्ति

पूर्ति का अर्थ : वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की वह मात्रा है, जो किसी दिए हुए समय में, निश्चित कीमत पर बाजार में बिकने के लिए आती है ।

पूर्ति के निर्धारक तत्त्व

i) वस्तु की अपनी कीमत

ii) उत्पादन तकनीक में परिवर्तन

iii) आदानों की कीमतों में परिवर्तन

iv) कर नीति

v) संबंधित वस्तुओ की कीमत

vi) उत्पादक का उद्देश्य

पूर्ति फलन : किसी वस्तु की पूर्ति और उसके निर्धारक कारकों के बीच कार्यात्मक संबंध प्रकट करता है ।

पूर्ति का नियम :(Law of Supply)

अन्य बातें पूर्ववत रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ती है और कीमत घटने पर पूर्ति घटती है ।

• काल्पनिक फर्म की पूर्ति अनुसूची

वस्तु की कीमत (प्रति किग्रा.)	वस्तु की पूर्ति (किग्रा.)
50 रु.	20
60 रु.	25
70 रु.	30

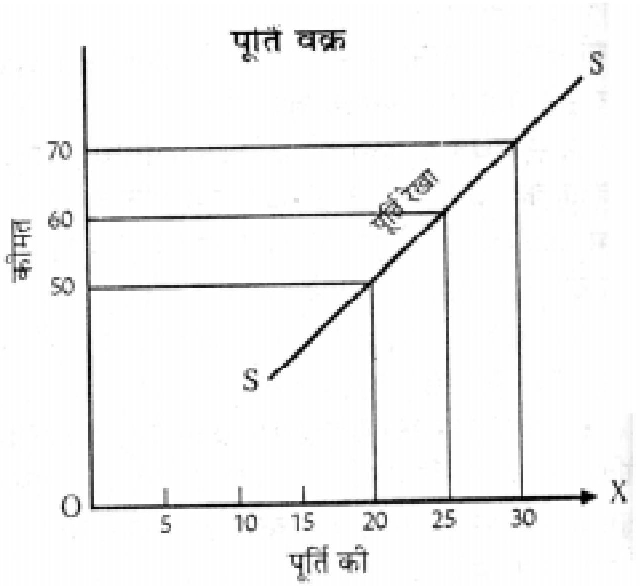

पूर्ति वक्र का आकार : पूर्ति वक्र का आकार सामान्यत: धनात्मक डाल वाला (Positively) होता है अर्थात कीमत बढ़ने पर यह दाई और ऊपर उठता है और कीमत गिरने पर बाई और ढाल होता है जैसे चित्र में दर्शाया गया है ।

पूर्ति नियम की मान्यताएँ : (Assumptions) नियम की परिभाषा में हमने अन्य बातें पूर्ववत रहे वाक्यांश का प्रयोग किया है । जो बताता है कि नियम तभी लागू होगा यदि कीमत छोड़कर पूर्ति के अन्य निर्धारक तत्त्व समान रहें । जैसे संबंधित वस्तुओं की कीमत समान रहे. उत्पादन में प्रत्येग किए जाने वाले सादनों की कीमत समान । (पूर्ववत) रहे, फर्म के उद्देश्य में परिवर्तन न हो, तकनीकी ज्ञान की स्थिति में परिवर्तन न हो, विक्रेताओं और क्रेताओं के स्वभाव, रूचि, आदत में परिवर्तन न हो, आदि - आदि ।

पूर्ति परिवर्तन और पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन : जब वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति में परिवर्तन आता हे तो उसे पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन (Change in quantity supplied) कहते है इसे पूर्ति में विस्तार या संकुचन की संज्ञा दी जाती है । इसका रेखाचित्र में प्रदर्शित माँग वक्र पर संचलन कहताला है । इसके विपरीत जब कीमतेततर कारकों में परिवर्तन के फलस्वरूप पूर्ति में परिवर्तन आता है तो उसे पूर्ति में परिवर्तन (Change of supply) कहते है । इसे पूर्ति में वृद्धि या कमी का नाम दिया जाता है और इस का रेखाचित्र में प्रदर्शित पूर्ति वक्र में खिसकाव के रूप में होता है ।

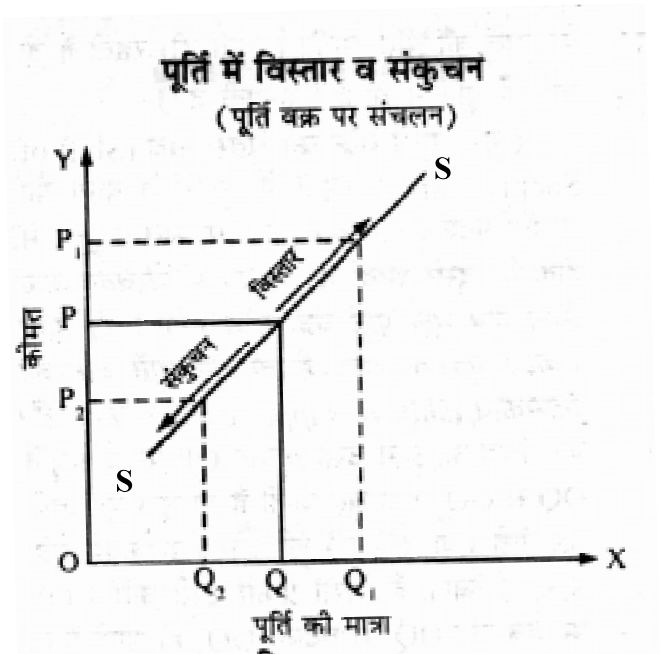

चित्र 3.27

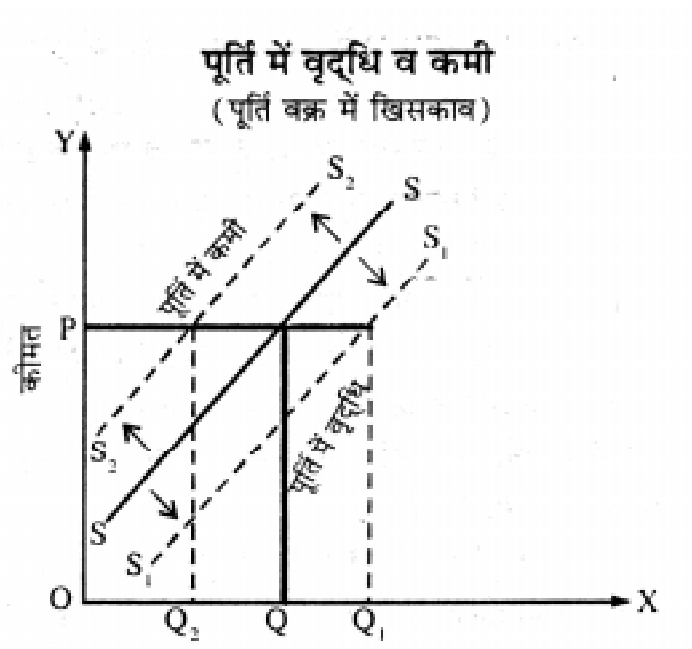

पूर्ति में संकुचन व कमी में अंतर : दोनों पूर्ति में गिरावट दर्शाते है परंतु उनके कारण अलग-अलग है ।

१) जब वस्तु की कीमत में गिरावट के कारण पूर्ति गिर जाती है तो इसे पूर्ति में संकुचन कहते है । उसके विपरीत जब कीमतेतर कारकों में परिवर्तन के कारण पूर्ति गिर जाती है । तो इसे पूर्ति में कमी कहते है

२) पूर्ति में संकुचन की दशा में पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचलन होता है जब कि पूर्ति में कमी की हालत में पूर्ति वक्र ऊपर (बाई ओर) खिसक जाता है ।

पूर्ति वक्र पर संचलन और पूर्ति वक्र के खिसकाव में अंतर - वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप जब वस्तु की कम या अधिक मात्रा में पूर्ति की जाती है तो इसका चित्रीय प्रदर्शन उसी पूर्ति वक्र पर नीचे या ऊपर की और संचलन के रूप में होता है जैसे चित्र में दर्शाया गया है । उसके विपरीत कीमतेतर कारकों में परिवर्तन के फलस्वरूप जब वस्तु की पूर्ति बढ़ाई या घटाई जाती है तो वस्तु का पूर्ति चक्र अपने मूल स्थान से दाएँ या बाएँ खिसक (Shift) जाता है ।

बाजार पूर्ति का अर्थ (Meaning of Market Supply) बाजार में किसी समय विशेष पर, वस्तु की एक दी हुई कीमत पर सभी विक्रेताओ की सामूहिक पूर्ति, बाजार पूर्ति कहलाती है । बाजार में व्यक्तिगत फर्म (विक्रेताओं) की जोड़ने से बाजार पूर्ति निकल जाती है । इसे अगले अनुच्छेद में दिखाई गई तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है जिसमें बाजार पूर्ति, व्यक्तिगत फर्मों की पूर्ति को मात्राएँ जोड़कर निकाली गई है ।

बाजार पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक (Determinants of Market Supply)

i) उत्पादन तकनीक में सुधार

ii) आगतों (उत्पादन के साधनों) की कीमतों में परिवर्तन

iii) करों /उत्पादन शुल्क की दरों में परिवर्तन

iv) संबंधित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन

v) बाजार में फर्मों (उत्पादनों) की संख्या

vi) भविष्य में कीमतों में परिवर्तन

पूर्ति की कीमत लोच का अर्थ : कीमत में परिवर्तन होने से पूर्ति में जिस गति से परिवर्तन होता है, उसे पूर्ति की कीमत लोच कहते है ।

$$\text{पूर्ति की कीमत लोच} = \frac{\text{पूर्ति की मात्रा मे प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में \% परिवर्तन}}$$

पूर्ति की लोच मापने की विधियाँ :

पूर्ति की लोच मापने की दो मुख्य विधियाँ है

प्रतिशत विधि और ज्यामिनीय विधि

प्रतिशत विधि - इस विधि के अनुसार पूर्ति की लोच मापने का सूत्र वही है जो माँग की लोच मापने का है । कीमत में प्रतिशत अंतर और पूर्ति में प्रतिशत अंतर के अनुपात से हम पूर्ति को लोच मापते है ।

$$\text{पूर्ति की लोच } (e_s) = \frac{\text{पूर्ति में \% परिवर्तन}}{\text{कीमत में \% परिवर्तन}}$$

(या) $$e_s = \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{p}{q}$$

पूर्ति की कीमत लोच मापने की ज्यामितीय विधि (Geometric Method)

$$e_s = \frac{\text{समतल खंड}}{\text{प्रारंभिक पूर्ति}}$$

सरल रेखीय पूर्ति वक्र के हर बिंदु पर पूर्ति की लोच इकाई से अधिक (e_s>1) है जब यह X - अक्ष को उसके ऋणात्मक खंड में काटती है इकाई से कम (e_s<1) है जब यह X - अक्ष को उसके धनात्मक खंड में काटती है और इकाई के बराबर (e_s=1) है जब यह X - अक्ष के उद् गम O बिंदु O से गचरती है ।

One Mark Questions

1) सीमांत लागत सारणी से कुल परिवर्ति लागत कैसे निकाली जाती है ?
2) AFC वक्र का सामान्य आकार कैसे होता है ?
3) स्थिर और परिवर्ती लागतों मे भेद कीजिए ?
4) क्या ATC और AVC वक्र प्रतिच्छेदन करते है ? अपने उत्तर के कारण बताइए
5) यदि MC > ATC तो ATCपर क्या प्रभाव पडेगा ?
6) अवसर लागत का अर्थ बताईए ।
7) परिवर्ति लागत के किन्ही तीन उदाहरण दीजिए ।
8) सीमांत आगम को परिभाषित कीजिए ?
9) किसी प्रतियोगी फर्म के लिए कीमत और सीमांत आगम में क्या संबंध होता है ?
10) कुल आगम अधिकतम होने पर सीमांत आगम कितना होता है ?
11) उत्पादक संतुलन से क्या तात्पर्य है ?
12) पूर्ति की परिभाषा दीजिए ? पूर्ति वक्र का खिसकाव कब होता है ।
13) पूर्ति वक्र पर संचलन कब होता है ।
14) उत्पादन तकनीक में उन्नति वस्तु के पूर्ति वक्र को कैसे प्रभावित करती है ?
15) पूर्ति की लोच क्या होगी जब पूर्ती वक्र मूल बिंदु से गुजरता है ।

3 / 4 Marks Questions

1) फर्म के AC वक्र और MC वक्र के बीच क्या संबंध है ?
2) MR पर क्या प्रभाव पड़ेगा जब
   i) TR घटती दर से बढ़ता है
   ii) TR स्थिर दर से बढ़ता है ।
3) अपूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का MR अपने AR से क्यों कम होता है ?
4) स्थिर और परिवर्ती लागतों में भेद कीजिए ?

6 Marks Questions

1) TFC और AFC वक्रों की प्रकृति की व्याख्या कीजिए ?
2) MR - MC विधि से उत्पादक के अधिकतम लाभ की शर्त समझाइए
3) रेखाचित्र की सहायता से पूर्ति की कीमत लोच मापने की ज्यामतिक विधि समझाइए

बाजार के रूप और कीमत निर्धारण

बाजार का अर्थ : बाजार से अभिप्राय उस समस्त क्षेत्र से होता है जहाँ किसी वस्तु के क्रेता और विक्रेता आपस में स्वतंत्र प्रतियोगिता करते है ।

बाजार संरचना के रूप व निर्धारिक तत्त्व

i) वस्तु के क्रेताओ और विक्रेताओं की संख्या

ii) वस्तु की प्रकृति

iii) फर्मों का निर्बाध प्रवेश व बर्हिमान

iv) पूर्ण जान

बाजार संरचना के रूप

बाजार संरचना के रूप व विशेषताएँ

पूर्ण प्रतियोगिता

- असंख्य क्रेता व विक्रेता
- समरूप पदार्थ
- नई फर्म का निबंध प्रवेश
- परिवहन लागत का अभाव
- पूर्ण ज्ञान
- पूर्ण गतिशीलता
- कीमत पर प्रभाव नहीं
- AR, MR वक्र

X- अक्ष के समानांतर

अपूर्ण प्रतियोगिता

एकाधिकार

- एक विक्रेता
- वस्तु का स्थानापन्न नहीं
- प्रवेश अति कठिन
- मूल्य विभेदन
- कीमत पर काफी प्रभाव
- AR, MR वक्र नीचे की और ढालू

जैसे दिल्ली विद्युत बोर्ड द्वारा बिजली की आपूर्ति

एकाधिकारारिक प्रतियोगिता

- फर्मों की काफी संख्या
- वस्तु विभेद
- निबांध प्रवेश
- विक्रय लागते
- कीमत पर कुछ प्रभाव
- AR, MR वक्र नीचे की और ढालू

(जैसे भारत में टूथपेस्ट बनाने वाली काफी फर्मे)

अल्पाधिकार

- चंद बड़े विक्रेता
- समरूप वस्तु विभेदीकृत वस्तु
- प्रवेश कठिन
- विक्रय लागते
- माँग वक्र को अनिश्चितता

(जैसे भारत कार बनाने वाली चंद फर्मे)

उद्योग कीमत निर्धारक और फर्म कीमत स्वीकारक

पूर्ण प्रतियोगिता में उद्योग कीमत-निर्धारक व फर्म कीमत - स्वीकारक ।

पूर्ण प्रतियोगिता में किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण समस्त उद्योग की माँग द्वारा होता है

उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत प्रत्येक फर्म को स्वीकार करनी पड़ती है ।

इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता में उद्योग को कीमत - निधारक और फर्म को कीमत - स्वीकारक कहा जाता है ।

कीमत का निर्धारण : पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु की कीमत का निर्धारण उद्योग की कुल माँग व कुल पूर्ती के संतुलन पर होता है । इसे उद्योग की साम्य या संतुलन कीमत भी कहते है ।

उद्योग			फर्म				
कीमत (रु.)	माँग (इकाइयाँ)	पूर्ति (इकाइयाँ)	कीमत (रु.)	बिक्री (इकाइयाँ)	कुल आगम	सीमांत आगम (MR)	औसत आगम (AR)
2	100	20	6	20	120	6	6
4	80	40	6	21	126	6	6
6	**60**	**60**	6	22	132	6	6
8	40	80	6	23	138	6	6
10	20	100	6	24	144	6	6

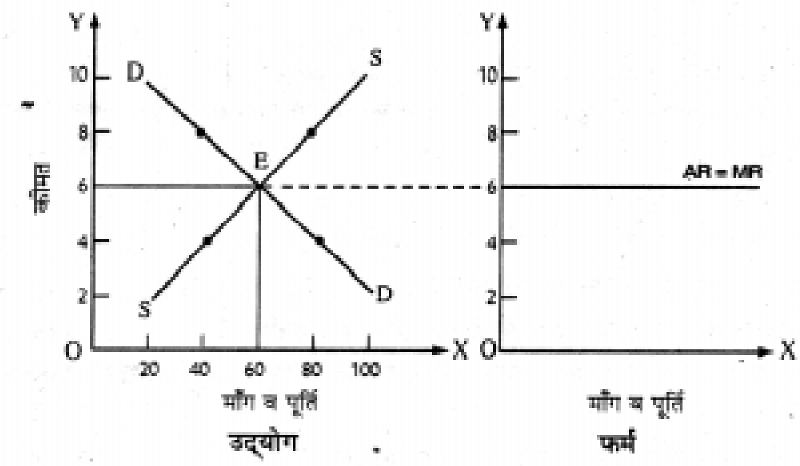

उपभोक्त तालिका से स्पष्ट है कि इस उद्योग में माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित कीमत । 6 रूपये प्रति इकाई होगी, क्योंकि इस कीमत पर माँग व पूर्ती दोनों बराबर है । अर्थात 60 - 60 इकाईयें है । उद्योग द्वारा निर्धारित इस कीमत को प्रत्येक फर्म स्वीकार करेगी । यदि कोई फर्म इस कीमत से अधिक लेने का प्रयत्न करेगी । तो उसकी वस्तु कोई नहीं खरीदेगा ।

संतुलन कीमत निर्धारण

संतुलन कीमत का अर्थ :

वह कीमत जिस पर वस्तु की माँग और पूर्ति बराबर होती है ।

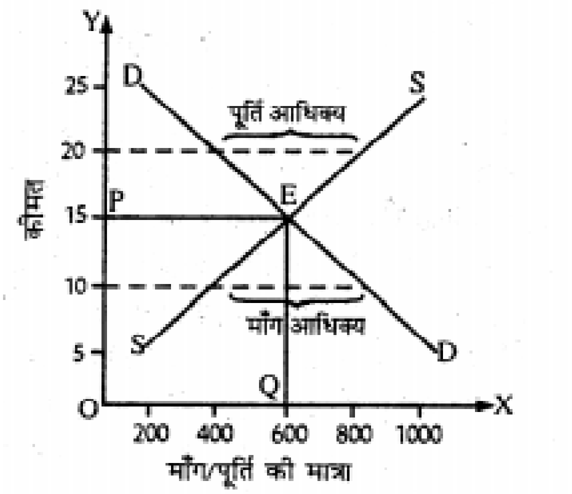

संक्षेप में रेखाचित्रीय भाषा में माँग और पूर्ति वक्र के परस्पर प्रतिच्छेदन बिंदु पर संतुलन कीमत निर्धारित होती है ।

जब माँग अधिक्य (Excess demand) है - यदि किसी दो हुई कीमत पर वस्तु की माँग पूर्ति से अधिक है तो वह संतुलन कीमत नहीं है । यह माँग आधिक्य की स्थिति है । ऐसी स्थिति मं क्तेताओं में प्रतियोगिता बाजार कीमत को उस बिंदु तक बढ़ा देगी जबाँ पर माँग की मात्रा पूर्ति की मात्रा के बराबर हो जाए ।

जब पूर्ति अधिक्य (Excess supply) है - यदि किसी दो हुई कीमत पर पूर्ति की मात्रा माँग से अधिक है तो यह संतुलन कीमत नहीं है । यह पूर्ति अधिक्य ी स्थिति है । ऐसी स्थिति में विक्रेताओं से प्रतियोगिता कीमत को उस बिंदु तक गिरा जहाँ माँग और पूर्ति बराबर हो जाए ।

माँग और पूर्ति के खिसकाव का संतुलन कीमत पर प्रभाव

इसे हम निम्न शीर्षकों के अंतर्गत करते है ।

१. केवल माँग में परिवर्तन (माँग वक्र का खिसकाव)

२. केवल पूर्ति में परिवर्तन (पूर्ति वक्र का खिसकाव)

३. माँग और पूर्ति में एकसाथ परिवर्तन (माँग और पूर्ति वक्र का एकसाथ खिसकाव)

जब पूर्ति स्थिर है - यदि एक वस्तु की पूर्ति स्थिर रहे तो उसको माँग बढ़ने पर साम्य कीमत बढ़ जाएगी व माँग घटने पर कीमत घट जाएगी

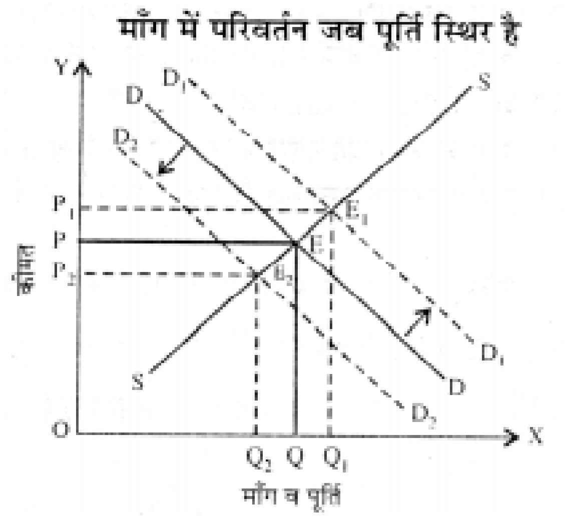

पूर्ति में कमी या वृद्धि (पूर्ति वक्र में खिसकाव) के प्रभाव

यदि एक वस्तु की माँग स्थिर रहे तो पूर्ति बढ़ने पर कीमत घट जाएगी व पूर्ति घटने पर कीमत बढ़ जाएगी ।

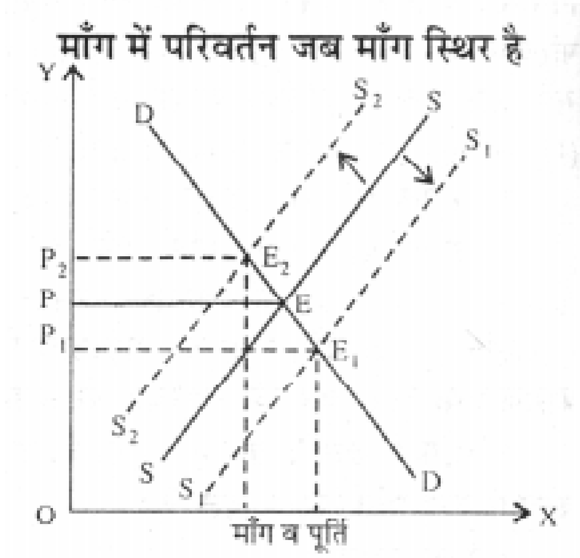

माँग व पूर्ति दोनों में एक साथ परिवर्तन (खिसकाव) के प्रभाव

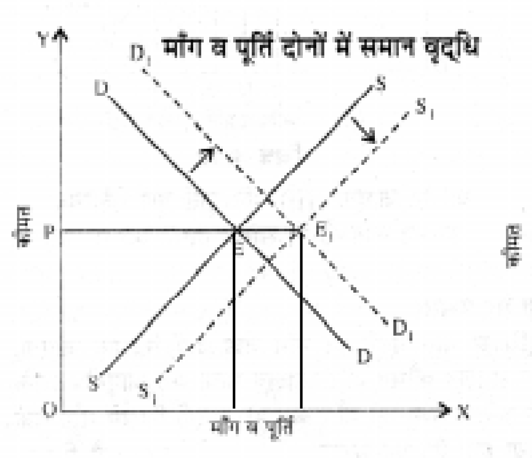

यदी वस्तु की माँग और पूर्ति की मात्रा समान दर से वृद्धि हो तो साम्य कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा जैसाकि चित्र से दिखाया गया है । ऐसी दशा में साम्य माँग और साम्य पूर्ति की मात्रा उसी दर से बढ़ जाएगी ।

One Mark Questions

i) संतुलन कीमत का अर्थ बताइए

ii) किसी आदान की कीमत में वृद्धि का, संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा,

iii) अभिरूचियों से सकरात्मक परिवर्तन का कीमत और मात्रा पर कैसे प्रभाव पड़ता है ?

iv) पूर्ण प्रतियोगिता की परिभाषा दीजिए

v) विक्रय लागते क्या होती है ?

vi) अल्पधिकार किसे कहते है ?

3 / 4 Marks Questions

i) एकाधिकार में AR वक्र एकाधिकारिक प्रतियोगिता में AR वक्र से कम लोचदार क्यों होता है ?

ii) पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत स्वीकारक और उद्योग कीमत निर्धारक है । समझाइए

iii) पूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकार में किन्ही तीन भेद लिखिए ।

iv) उत्पाद विभेद विशेषता की व्याख्या कीजिए संतुलन कीमत का निर्धारिण कैसे होता है । समझाइए

6 Marks Questions

i) यदि एक वस्तु की दी हुई कीमत पर पूर्ति आधिक्य है तो संतुलन कीमत पर कैसे पहुँचेगी ? रेखाचित्र की सहायता से समझाइए

ii) एक वस्तु के माँग वक्र के बाई ओर खिकने से उसकी संतुलन कीमत और मात्रा पर पड़ने वाला प्रभाव चित्र की सहायता से समझाइए

iii) पूर्ति एकाधिकार और एकाधिकारिण प्रतियोगिता में तुलना कीजिए ।